मनोचिकित्सा मेनुअल के लेखक दवा उद्योग से जुड़े हैं

अमेरिकन साइकिएट्रिक एसोसिएशन मानसिक रोगों के निदान हेतु एक मेनुअल (डीएसएम) तैयार करता है। हाल ही में इसे संशोधित किया गया है। मगर पता चला है कि इस मेनुअल के कई सारे लेखकों के सम्बंध दवा उद्योग से हैं। पूर्व में प्रकाशित मेनुअल के साथ भी यही समस्या थी। गौरतलब है कि इस मेनुअल का उपयोग एक मानक के तौर पर किया जाता है।

यह पहली बार था कि अमेरिकन साइकिएट्रिक एसोसिएशन ने लेखकों पर शर्त लगाई थी कि वे दवा उद्योग से अपने वित्तीय सम्बंधों का खुलासा करेंगे। एसोसिएशन ने तय किया था कि इस मेनुअल के किसी भी लेखक को किसी दवा कंपनी से एक साल में 10,000 डॉलर से ज़्यादा प्राप्त नहीं होने चाहिए और उनका स्टॉक होल्डिंग 50,000 डॉलर से अधिक नहीं होना चाहिए। मगर 10,000 डॉलर की उपरोक्त सीमा में शोध अनुदान शामिल नहीं है।

मगर हार्वर्ड विश्वविद्यालय की लिसा कॉसग्रोव और टफ्ट्स विश्वविद्यालय के शेल्डन क्रिम्स्की ने 'कार्य दल' के 141 सदस्यों द्वारा दी गई जानकारी का विश्लेषण करके पाया कि उनमें से 57 प्रतिशत व्यक्तियों के हित दवा कंपनियों से जुड़े हैं। खास कुछ बदला नहीं है।

विश्लेषण में यह भी पता चला कि जिन 'कार्य दलों' ने ऐसे मनोरोगों पर काम किया जिनमें दवाइयों का उपयोग प्रमुखता से होता है, उनमें ऐसे सदस्यों की संख्या सबसे ज़्यादा थी जिनके तार दवा कंपनियों से जुड़े हैं। यही वे रोग हैं जहां परिभाषा में बदलाव सबसे ज़्यादा विवादास्पद भी हैं। जैसे एक बीमारी है मूड की गड़बड़ियां। कार्य दल का प्रस्ताव है कि इसमें उन लोगों को भी शामिल किया जाए जिनके किसी निकट सम्बंधी का निधन हुआ हो और ऐसे शोक संतप्त व्यक्तियों को अवसादग्रस्त की श्रेणी में रखा जाए। ऐसे कई उदाहरण हैं।

आलोचकों का मत है कि डीएसएम के हर नए संस्करण में मनोरोगों की परिभाषाओं का विस्तार होता गया है और यह सब दवा कंपनियों के दबाव में हुआ है।

कॉसग्रोव की सबसे बड़ी चिंता यह है कि इन लेखकों में से कई सारे तो दवा कंपनियों के उत्पादों के लिए बतौर 'व्याख्याता' काम करते हैं। यानी वे समय-समय पर इन कंपनियों के उत्पादों के पक्ष में बतौर विशेषज्ञ व्याख्यान देते हैं और पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं। ऐसे में इस मेनुअल की प्रामाणिकता पर संदेह पैदा होना स्वाभाविक है। ***(स्रोत फीचर्स)***